दिल्ली-डिफेंस कॉलोनी। काउंसलर अभिषेक दत्त तथा उनके स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. अनुज तथा अन्य।

सिरमौर-हि.प्र.। रक्षाबंधन पर्व पर बीबी बलविन्दर कौर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संध्या।

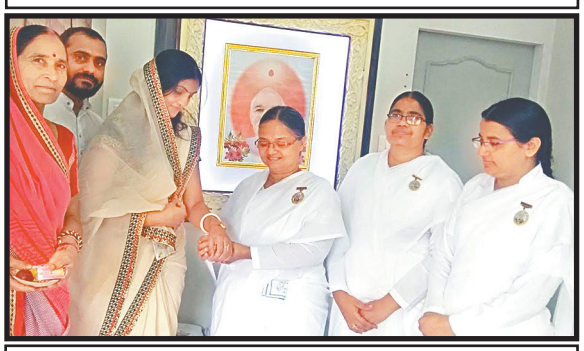

किशनगढ़ रेनवाल-राज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्षा सुमन कुमावत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. सुमित्रा तथा अन्य।

रूपवास-राज.। मजिस्ट्रेट सुनील जांगिड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. एकता, ब्र.कु. शिखा तथा अन्य।

सिरसागंज-उ.प्र.। नगरपालिका अध्यक्ष सन्त कुमार व उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. गीतांजली, ब्र.कु. शशी तथा ब्र.कु. मंजू।

सहरसा-बिहार। डी.एम. शैलजा शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्नेहा।

आत्म शक्ति से मज़बूत हैं, तो कोई समस्या तोड़-मोड़ नहीं सकती

- गतांक से आगे...

हताशा तभी आती है जब मन, वाणी और कर्म, ये तीनों अलग-अलग दिशा में हैं। पुरुषार्थ करने के बावजूद भी ये एक नहीं हो पा रहे हैं। तो ये है परमात्मा द्वारा स्पष्ट किया गया 'ओम ततसत्' का गहरा आध्यात्मिक रहस्य। अर्थात् जब ओम शब्द का उच्चारण करो तो उस वक्त ये जागृति अंदर में ले आओ कि मेरे मन, वचन और कर्म तीनों एक हैं, सुसंवादिता में हैं।

ओम शांति शब्द भी जब कहते हैं, तो उसका भाव भी यही है कि जब मन, वचन, कर्म तीनों एक होंगे तो जीवन में शांति का अनुभव होगा। 'ओम शांति' शब्द ये कोई हाय, हेलो, गुडमॉर्निंग की तरह नहीं है। ये शब्द जागृति का है। मेरे मन, वचन, कर्म एक हैं। जितना उसको एक करते जायेंगे उतना जीवन में सुख, शांति, प्रसन्नता आने लगेगी। बहुत सुंदर जीवन का अनुभव हम इस जीवन में रहते हुए कर सकते हैं। जहाँ जीवन जीने का भी एक संतोष, एक आनंद, एक तृप्ति का अनुभव कर सकते हैं। ये है जीवन जीने की कला। इस चुनौतियों भरे युग में भी अगर ये तीनों अलग-अलग दिशा में चले गये, तो व्यक्ति को कितनी खींचातानी का अनुभव जीवन में करना पड़ता है, कितना संघर्ष बढ़ जाता है। लेकिन अगर चुनौतियों भरे युग में ये शक्ति हमारी इकट्ठी हो गई है, ये सारे तत्व हमारे एक हो गये तो हमारे जीवन में शक्ति आने लगेगी। जिस शक्ति के आधार पर कोई हमें भीतर से तोड़ नहीं सकता है। कोई समस्या हमें तोड़ नहीं सकती है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

एक बार एक बुज़ुर्ग था और उसके तीन बेटे थे। ये तीनों बेटे सारा दिन आलसी होकर के अपना सारा समय व्यतीत करते रहते थे। कोई खास काम-धंधा नहीं करते थे। उस बुज़ुर्ग ने जीवन भर उनका पालन-पोषण करते हुए बड़ा तो किया लेकिन जैसे ही उसको अपना अंतिम समय नज़दीक आता हुआ दिखायी दिया, उसको चिंता होने लगी कि ये जो मेरे बेटे हैं कोई काम-धंधा नहीं कर रहे हैं। इस तरह से जीवन में कैसे चलेगा? ये तीनों आपस में भी लड़ते रहते हैं। तो फिर उनकी शक्ति का भी क्या होगा? कोई भी उनका गलत उपयोग कर लेगा, गलत दिशा पर ले चलेगा, संग-दोष लग जायेगा। तो जैसे उसको चिंता होने लगी। एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और तीनों बेटों को बुलाते हुए, लकड़ी की एक गठरी मंगवाई। लकड़ियां सारी इकट्ठी थीं। एक बेटे को बताया कि ये गठरी खोल दो। उसने उन लकड़ियों को अलग-अलग किया। तीनों को एक-एक लकड़ी उठाने के लिए कहा। एक-एक लकड़ी तीनों ने उठा ली। अब बुज़ुर्ग ने कहा इनको तोड़ दो। तो तीनों ने एक ही झटके में दो टुकड़े कर दिए। उसके बाद बुज़ुर्ग ने कहा कि ये जो बची हुई लकड़ियां हैं, इनको वापस बांध दो। जब लकड़ी का बंडल बंध गया, तो उस बुज़ुर्ग ने कहा कि अब इस बंडल को तोड़ने का प्रयत्न करो। बच्चों ने कहा कि बंडल कैसे टूटेगा? बुज़ुर्ग ने कहा बेटे, यही तो मैं समझाना चाहता हूँ। अगर आप लोग अलग होकर लड़ते-झगड़ते रहे, तो आपकी शक्ति को कोई भी तोड़ देगा। आपका दुरुपयोग करेगा, आपको गलत दिशा में ले जायेगा। अगर आप इस बंडल की तरह बंधे रहे तो किसी की ताकत नहीं जो आपको तोड़ सके, आपको गलत दिशा पर ले जा सके। इसीलिए संगठन की शक्ति का महत्व है। - क्रमश:

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया, संपादक - ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,
शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

यह जीवन है...

सुन्दता की कमी को अच्छा स्वभाव पूरा कर सकता है, लेकिन स्वभाव की कमी को सुन्दरता से पूरा नहीं किया जा सकता।
मौन से जो कहा जा सकता है,
वो शब्द से नहीं और
जो दिल से दिया जा सकता है,
वो हाथों से नहीं!
बुरे में अच्छा ढूंढो, तो कोई बात बने,
अच्छे में बुराई ढूंढ़ना, ये तो दुनिया का रिवाज़ है।

ख्यालों के आईने में...

सोच?

बारिश के दौरान सारे पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं, लेकिन बाज बादलों के ऊपर उड़कर बारिश को ही अवॉइड कर देते हैं। समस्याएं कॉमन हैं, लेकिन आपका नज़रिया इनमें अंतर पैदा करता है। इसलिए अपने सोचने के नज़रिये को चेंज करें।

विश्वास?

विश्वास में वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है। विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और अविश्वास भगवान के बनाए इंसान को भी पत्थर दिल बना सकता है।
विश्वास की नींव पर टिके हैं सारे रिश्ते।

टुण्डला-रामनगर(उ.प्र.)। एस.डी.एम. डॉ. सुरेश कुमार, सी.ओ. संजय वर्मा, एस.एच.ओ. बी.डी. पाण्डे, आगरा भ्रष्टाचार संगठन निरीक्षक राजीव यादव, थाना इंचार्ज एल.एस. पौनिया तथा आगरा न्यायालय के पेशकार आयुक्त प्रदीप कुमार शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजय बहन तथा ब्र.कु. तनु।